B.A 2

Paper III

By:—
Dr Shailesh Kumar
dept. of economics
Raja Singh college Siwan.

4.5.20

आर्थिक विकास में कृषि की भूमिका :-

(role of agriculture in economic development)

मानव सभ्यता के विकास से ही कृषि विश्व अर्थव्यवस्था की जीविका का प्रधान साधन रही है। वास्तव में, कृषि सभी उद्योगों की जननी और मानवी जीवन का पोषक रही है। इतना ही नहीं, यह आदि काल से ही सभी विज्ञानों और कलाओं की सिरमौर, मानव सभ्यता का प्रतीक और भौतिक प्रगति का सूचक समझी जाती रही है। मूल रूप में इसे आर्थिक विकास की कुँजी भी कहा जाता है। क्योंकि औद्योगिक विकास की शुरुआत: कृषि विकास से ही होता है। आज औद्योगिक दृष्टि से विकसित पश्चिमी राष्ट्रों - इंग्लैण्ड, संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, तथा जापान के औद्योगिक विकास का इतिहास भी इस बात का साक्षी है। वास्तव में इन देशों में तीव्रगति से कृषि के विकास ने औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार कर सुदृढ़ आधार प्रदान किया है। यदि कोई राष्ट्र सर्वप्रथम इसे प्राप्त करने में असफल सिद्ध होता है तो समस्त विकास की प्रक्रिया ही अवरुद्ध हो सकती है। प्रो० शुल्ट्ज के अनुसार "कोई भी अल्पविकसित राष्ट्र खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता प्राप्त किए बगैर द्रुतगति से अपने आर्थिक विकास की कल्पना भी नहीं कर सकता"। तात्पर्य यह है कि कृषि का विकास आर्थिक विकास के लिए आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार करने में अकथनीय सहयोग प्रदान करता है।

आर्थिक विकास में कृषि की भूमिका निम्नलिखित हैं:—

(1) तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या की खाद्य सामग्री की वृद्धिशील माँग को पूरा करना :— कृषि का सर्वाधिक योगदान तेजी से ...

P.T.O.

देश जहाँ कम विकसित होते हैं —

Scanned by CamScanner

बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद्य सामग्री उपलब्ध कराना आज के अल्पविकसित देशों में कृषि का महत्व निम्नांकित दो बातों और भी बढ़ जाता है। प्रथमतः - तो इनमें से अधिकांश देशों में जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि दर सामान्यतः से 2.5 प्रतिशत होने के कारण खाद्यान्नों की माँग तेजी के साथ बढ़ती है।

द्वितीयतः विकसित देशों की अपेक्षा इन देशों में खाद्य सामग्री की माँग की आय लोच मात्रा में ऊँची होती है। एक अनुमान के अनुसार माँग की यह ऊँची आय लोच खाद्यान्नों की माँग में लगभग 30 से 35 प्रतिशत तक वार्षिक वृद्धि कर देती है। किंतु इतना अधिक कृषि विकास में वृद्धि की दर को प्राप्त करना किसी भी अल्पविकसित देश की कृषि के लिए एक बड़ी चुनौती है। अतः इन देशों के आर्थिक विकास के परिवेश में जब कृषि वस्तुओं की तेजी के साथ बढ़ती हुई माँग के तदनुसार खाद्य सामग्री की पूर्ति को नहीं बढ़ाया जा पाता तो उनके आर्थिक विकास का ढाँचा ही चरमरा उठता है। स्फीतिक दबाव बढ़ने लगते हैं। और जीवन स्तर में ह्रास होने लगता है। भारत में भी 1950 एवं 1960 के दशक में यही बात हुई थी।

2. औद्योगिक कच्चे माल की आपूर्ति :- कृषि कुछ प्रमुख उद्योगों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति का भी मुख्य स्रोत होती है। इनमें सूती वस्त्र, जूट तथा चीनी उद्योग उल्लेखनीय हैं। सुविधापूर्वक कच्चे माल मिल जाने पर इनमें से कुछ उद्योग तो औद्योगिक विकास के लिए प्रमुख क्षेत्र का भी कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए इंग्लैण्ड की महान औद्योगिक क्रांति सूती वस्त्र उद्योग से ही हुई थी। यदि कृषि क्षेत्र पिछड़ा हुआ है तो औद्योगिक कच्चे माल की कमी न हो पाने के कारण उद्योगों का विकास निश्चय ही गंभीर पड़ जाएगा। और आर्थिक विकास की दर भी नीची ही बनी रहेगी। इस प्रकार प्रो० रोस्टाव (W.W. Rostow) के अनुसार कृषि औद्योगिक विकास की आधारशिला है और कृषि का औद्योगिकरण के लिए अत्यन्त आवश्यक पूँजी का कार्य करती है।

(3) पूँजी निर्माण में सहायक :- कृषि का विकास पूँजी निर्माण में भी सहायक होता है। अविकसित अल्पविकसित देशों में एक ओर तो पूँजी

P.T.O.

Scanned by CamScanner

की न्यूनता होती है जबकि कुशल और उन्हें निर्माण संबंधी उद्योगों की स्थापना के लिए बड़ी मात्रा में निवेश करने की जरूरत होती है। ऐसी स्थिति में कृषि क्षेत्र दो तरीके से पूँजी निर्माण में सहायक सिद्ध होती है। प्रथमतः कृषि की उत्पादकता में वृद्धि के फलस्वरूप कृषि क्षेत्र की आय बढ़ जाने से बचत करने की क्षमता का विस्तार होता है। फलस्वरूप अनिवार्य बचतों के रूप में सुगमता से पूँजी उपलब्ध हो जाती है।

द्वितीयतः, कृषि में चूँकि "कम पूँजी-प्रधान" तरीकों अथवा पूँजी बचत उपायों का ही प्रयोग करके उत्पादकता में वृद्धि करना संभव होता है इसलिए कृषि क्षेत्र में रहन सहन के स्तर को कम किये बगैर ही पूँजी निर्माण के लिए पर्याप्त साधन प्राप्त किये जा सकते हैं।

(4) विदेशी विनिमय की प्राप्ति का स्रोत :- विकास की प्रारंभिक स्थिति में अल्पविकसित देशों का आर्थिक विकास के लिए बड़ी मात्रा में पूँजीगत वस्तुओं तथा अत्यावश्यक सामग्रियों के लिए आयात की भी आवश्यकता होती है। कृषि का विकास एवं विस्तार होने से देश का निर्यात बढ़ जाता है, जिसका प्रभाव अधिक मात्रा में विदेशी विनिमय अर्जित करना होता है। इस प्रकार निर्यात व्यापार के लिए कृषि उपजों का विस्तार इन देशों के लिए विदेशी विनिमय और आर्थिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

(5) औद्योगिक माल के लिए बाजार तैयार करना :- इतना ही नहीं कृषि औद्योगिक क्षेत्र द्वारा निर्मित माल के लिए बाजार भी प्रदान करती है। कृषि की उत्पादकता में वृद्धि से ग्रामीण जनसंख्या की आय बढ़ती है जिससे औद्योगिक वस्तुओं की माँग अधिक हो जाती है। फलस्वरूप औद्योगिक क्षेत्र का विकास होते रहता है।

(6) अन्य पूँजी प्रधान के लिए श्रम शक्ति उपलब्ध कराना :- कृषि क्षेत्र का एक अन्य योगदान औद्योगिक क्षेत्र के लिए आवश्यक श्रम-शक्ति उपलब्ध बनाना भी है। कृषि के विकास के कारण जब उत्पादकता बढ़ती है तो वर्तमान जनसंख्या को खाद्य सामग्री प्रदान करने के लिए कृषि क्षेत्र में पहले की अपेक्षा कम लोगों की आवश्यकता पड़ती है। फलस्वरूप कृषि में संलग्न श्रम शक्ति का एक बड़ा हिस्सा अन्य व्यवसायों के लिए मुक्त हो जाता है, विशेष रूप से विकास की प्रारंभिक अवस्था में गैर कृषि क्षेत्रों के लिए श्रम शक्ति का अधिकांश भाग कृषि क्षेत्र द्वारा ही उपलब्ध कराया जाता है क्योंकि प्रारंभिक स्थिति में अन्य क्षेत्र बहुत कम विकसित होते हैं।

Scanned by CamScanner